ISSN 0975 - 8658

BASELIUS RESEARCHER

A Biannual Journal of
Interdisciplinary Studies and Research

Volume XI Number 2
July - December 2010

ELEVENTH ISSUE

Published on Behalf of

Baselius Research Guidance Centre
Baselius College, Kottayam
Kerala, India - 686 001

BASELIUS COLLEGE, KOTTAYAM
NAAC REACCREDITED. @ B++ LEVEL
Affiliated to Mahatma Gandhi University
Kottayam, Kerala

Scanned with OKEN Scanner

BASELIUS RESEARCHER
Journal of Interdisciplinary Studies and Research
Baselius College, Kottayam, Kerala, India

ISSN 0975 - 8658
Vol. XI No. 2
July - December 2010
pp 226 - 229

मालती जोशी की कहानी 'प्रतिरोध' में नारी चेतना

Santy Joseph

मालती जोशी का जन्म 4 जून 1934 को औरंगबाद, पूर्व हैदरावाद राज्य में महाराष्ट्रीयन परिवार में हुआ। उनकी 34 पुस्तकों प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें दो मराठी कथा संग्रह, दो उपन्यास पॉच बाल कथाएँ, एक गीति संग्रह और शेष कथा संग्रह सम्मिलित हैं। प्रमुख कहानिसंग्रह है - 'मध्यान्तर', 'दादी की घडी', 'एक घर सपनों का', 'जीने की राह', 'विश्वास गाथा', 'पराजय', 'राग विराग', 'शोभा यात्रा' आदि। अहिन्दिभाषी कथा लेखिका के रूप में शिवसेवक तिवारी पदक रचना पुरस्कार, कलकत्ता 1983, मराठी कथा संग्रह पाषण केलिए महाराष्ट्र शासन का पुरस्कार, सन 1984, मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन का भवभूति अलंकरण से वर्ष 1998 में विभूषित।

मालती जोशी ने अपनी अधिकतर रचनाओं में दांपत्य, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन को उभारा है। उन्होंने अधिकतम रचनाएँ भारतीय परिवेश को लेकर ही लेखी है। उन्होंने अपनी कहानियों द्वारा समकालीन मध्यवर्गीय नारी जीवन की विभिन्न समस्याओं को समाज के समक्ष दिखाने का प्रयास किया है। आर्जिका नारी की समस्यायें, दहेज पीड़िता नारी की समस्यायें, विधवा की समस्यायें, अविवाहिता नारी की समस्यायें, उपेक्षिता एवं परित्यक्ता नारी की समस्यायें, बाँझ की समस्या, निठल्लू पुरुष की पली की समस्या, नारी के अकेलेपन की समस्या, कलंकिता नारी की समस्या आदि का जीवंत चित्रण उसकी रचनाओं में देख सकती है। "कथा-लेखिका ने बहूत सारी कहानीयों में समकालीन मध्यवर्गीय नारी जीवन की विभिन्न समस्याओं को चित्रित करने का प्रयास किया है... श्रीमती जोशी की अधिकांश कहानियाँ पारिवारिक जीवन तथा नारी जीवन की समस्याओं से होते हुए भी लेखिका का ध्यान परिवारेतर विषयवस्तु की ओर भी गया है।"[1]

मालती जोशी अपनी रचनाओं द्वारा नारी जाति के प्रति पूरी सहानुभूति उडेल देती है और पुरुष वर्ग की असली तस्वीर उतारकर रख देने का श्रम भी करती है। अपनी

Scanned with OKEN Scanner

अस्मिता केलिए प्रयासरत नारियाँ उनकी कई कहानियों में दीख पडती हैं। अपनी नारी पात्रों के बारे में वह खुद कहती है कि "स्त्री विमर्श तो मेरी हर कहानी में अन्तरधारा की तरह प्रवहित है। बस यह नज़र नहीं आता।"[2]

हिन्दुस्तान में पत्नियों को पतियों के सामने आँखें उठाकर बातें करने तक का ताब प्रायः नहीं है। इसलिए वे अत्याचारों को चुपचाप सहन करती हैं। कभी-कभी पति-पत्नियों के मन में हीनता बोध उठता है। रूप सौन्दर्य में भिन्नता होने के कारण पति था पत्नी में हीनता बोध होता है। इसके फलस्वरूप पारिवारिक जीवन तनावपूर्ण बन जाता है।

मालती जोशी द्वारा कृत 'प्रतिरोध' नारी अस्मिता की सशक्त कहानी है। गरीब घर की लड़की है मीरा। पर रूप सौन्दर्य में राजरानी सी लगती है। इसलिए सुयश की मां उसे बेटे के लिये मांगती है। मीरा के मां-बाप भी इस प्रस्ताव से खुश होते है क्योंकि दो बेटियों के ब्याह करके वे एकदम विवश हो गए है। दो लड़कियाँ बाकी है। इसलिए दान-दहेज के बिना ऐसा घर और वर मिलने से वे धन्य हो जाते हैं।

सुयश अपने को मीरा के योग्य नहीं समझता है। वह सोचता है कि मीरा परिस्थिति से मजबूर होकर शादी के लिए तैयार होती है। यह एहसास उन्हें बेचारा - सा बना देता है। वह कभी खुलकर बातें नहीं करता है और किसी तरह की फरमाईश भी नहीं करता है। घर में कभी उनकी ऊँची आवाज़ भी नहीं सुनाई पडती है।

कहानी का खलनायक है मीरा का ननदीई। इस व्यक्ति की खोटी नीयत तो शादी के मंडप से ही आरंभ होती है। मजाक के नाम पर बड़ी भद्दी फब्तियाँ कस रहे हैं और सब लोग 'हो-हो' करके हँस रहे हैं। इस व्यक्ति के प्रति मीरा के मन में एक वितृष्णा, एक जुगुप्सा का भाव उपजा है। अब तो उसके साथ भय और क्रोध भी जुड़ जाता है। ननदोई की कामलोलुप दष्टि मीरा को पीछा कर रही है। लेकिन उनके सामने जाने का साहस या इच्छा मीरा में नहीं है। एक दिन वह शाम का खाना बनने में व्यस्त है। दोपहर का खाना खाकर सुयश रोज की तरह दुकान चला जाता है। अम्माजी बिटिया को लेकर सुनार के पास गई है। मीरा घर में बिलकुल अकेली है। इतने में घर का दामाद आकर रसोई की चौखट पर खड़े होकर एक कप चाय मांगता है। मीरा घबराती है और बाहर बैठने का आदेश देती है। फिर वह पानी और चाय बनाकर देती है। दामाद को चाय देने के बाद वह रसोई की ओर मुड़ी है तो वह उसके आंचल को पकड़ता है। वह किसी तरह अपना आँचल छुडाती है और अम्माजी को शिकायत करने की धमकी देकर वहाँ से भाग जाती है। रसोई का दरवाजा बन्द करके अपने कमरे में चलती है और अंदर से दरवाज़ा बन्द करती है। अम्माजी और ननद बाजार से लौटने के बाद ही यह कमरे से बाहर आती है। खाना पकाने के बाद वह कमरे में लौट आती

है और किताब पढ़ते-पढ़ते सो जाती है। इतने में सुयश लौट आता है। उनका मूड काफी उखड़ा हुआ है। मीरा समझती है कि पति ननदोई के साथ खाना खाता है। ननदोई ने मीरा के लगता है कि ननदोई यह काम कर रहा हैं। तब वह पति की सहायता मांगती है लेकिन मिलने की कोई आशा नहीं है। इसलिए वह कहती है कि "अस आदमी को उसकी औकात तो दिखा दूँ। वैसे यह काम आपको करना चाहिए था, पर जब आपको अपनी कुंठाएँ सहने से ही फुर्सत नहीं है तो अपनी लड़ाई मुझे ही लड़नी होगी।"[3]

वह नीचे उतर जाती है। तब वह देखती है कि अम्माजी के कमरे में बैठकर ननदोई मीरा को कोसती है, बदनाम करने की कोशिश करता है। अचानक दरवाज़ों खड़ीं मीरा को देखकर कमरे में सन्नाटा छा जाता है। मीरा एकटक ननदोई को घूर देख रही है। उसकी दृष्टि का ताप सहा न जाते तो वह उठ खड़ा होता है और यहाँ से बचने की कोशिश करता है। तब मीरा लपककर उसका हाथ पकड़ लेती हैं और ननद की गोद में लोटे बेटे के सिर पर रखकर कहती हैं "अब बोलिए जीजाजी। आप अम्माजी को जो गाथा सुना रहे थे, क्या वह सच है"[4] मीरा का स्पर्श अब वज्र की तरह कछठोर और अग्नि की तरह दाहक लग रहे है। तब ननद बेटे के सिर पर रखा पति का हाथ जोर से झटक देती है और कहती है "खबरदार, जो मेरे बेटे की झूठी कसम खाई।" उसने फुफकारते हुए कहा, "यह बच्चा मैं ने सेंत मेंत में नहीं पाया है। सैकड़ों देवि-देवताओं की चौखट पर माथा रगड़ा है तब कहीं यह मेरी गोद में आया है। इसे मैं तुम्हारी काली करतूता पर बलि नहीं चढ़ने ढूँगी।"[5] यह सुनकर वह क्रोध से गुर्गती है। लेकिन ननद आगे कहती है "मुझे आँखें मत दिखाओ। मैं कोई गलत नहीं कह रही हूँ। अपने घर को तो नरक बना ही दिया है। अब यहाँ भी गंदगी फैला रहे हो। तुमने क्या समझा कि तुम्हारी भावज की तरह दुनिया की हर औरत इतनी कमज़ोर है?"[6] अम्मा उसे शांत करने की कोशिश करती है। लेकिन वह चुप रहने के लिए तैयार नहीं है। "नहीं, अम्मा। मैं अब चुप नहीं रहूँगी। मैं अब तर होट सोकर खून के घूँट पीती रही हूँ, पर अब पानी सर से ऊपर हो गया है। जानती हो, मेरा देवर छह महीने के लिे विलायत गया तो इन्होंने उसकी बहू को पटा लिया। अभी दूसरों का बखान कर रहे थे। भूल गए कि मेरे घर में मेरी आँखों के सामने रासलीला रचाते रहते हैं। उससे जी नहीं भरा तो अब मेरे भाई के घर में सेंध लगने चले आए हैं। पर मैं अपनी जीते-जी यहा नहीं होने दूँगी, ध्यान रखना।"[7] यह सुनकर जीजाजी दरवाज़े की ओर चलता है और फिर पीछे मुड़कर छाया को बुलाता है। लेकिन वह पति के साथ जाने के लिए तैयार नहीं है। "मैं अब उस नरक में लौटकर नहीं जाऊँगी।"[8] वह पीहर में रहने का निश्चय करती है और परिवारवाले इसे सांत्वना देते हैं। बातचीत के बीच में एक बार फिर अपनी अस्मिता को प्रकट करके मीरा छाया से कहती है कि पति-भक्ति का मतलब यह तो नहीं होता कि उसका जायज-

Scanned with OKEN Scanner

नाजायत सारी बातों को अनदेखा किया जाए।" "... पता नहीं कैसे आप उस गलीज माहौल में इतने दिन रह लीं। पर मुझमें इतनी हिम्मत नहीं है। मैं ऐसे वातावरण में साँस नहीं ले सकती जहाँ चौबीसों घटे आप पर शंकालू नजरों का पहरा बैठा हो। जहाँ रोज नए सिरे से अपने आपकी साबित करना पड़े।"[9] मीरा के अस्मिता - भरे शब्दों से सुयश का भी स्वरूप बदलता है। चंदन भी कभी-कभी आग दे सकता है।

मालती जोशी की दो सशक्त पात्रों को प्रस्तुत कहानी में देखा जा सकता है। मीरा स्वाभिमानी है और अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए जागरूक है। छाया आँखें उठाकर पती को देखने केलिए तैयार नहीं है। पर अवसर मिलने पर वह भी पति के अनाचारों के विरुद्ध आवाज़ उठाती है।

संदर्भ एवं टिप्पणियां

1. मालती जोशी का कथा साहित्य : डॉ. सुभाष तलेकर पृः ३४
2. मालती जोशी : साक्षात्कार, मार्च, २००५, पृः १९
3. वो वेश घर ये मेरा घरः मालती जोशी, पृः १३
4. वही, पृः १४
5. वही, पृः १४
6. वही, पृः १४
7. वही, पृः १४-१५
8. वही, पृः १५
9. वही, पृः १६

About the author :

Dr. Santhy Joseph is Lecturer in Hindi, Deva Matha College, Kuravilangadu, Kottayam, Kerala.

Scanned with OKEN Scanner